रात्रि क्लास 22-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप पहलेसे ही बताते हैं विघ्न पड़ेंगे। अबलाओं पर अत्याचार होंगे। बाबा आया हुआ है। शिव जयन्ति भी मनाते हैं। पहले2 तुम समझाते हो बाप शिव जब स्वर्ग की स्थापना करें करने आवेंगे। बाप का वर्सा है ही स्वर्ग की बादशाही। तुम समझाते हो शिव बाबा आया हुआ है। और जो भी धर्म के मनुष्य हैं कोई भी धर्म वाला हो बाप कहते हैं वह सभी छोड़ दो। निश्चय है बाप आया हुआ है। वह तो आते ही हैं स्वर्ग की स्थापना करने। और सभी को वापस ले जाने। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। तो मैं मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हूं। अपना परिचय भी देते हैं। जो भी धर्मवाले हैं बच्चे तो मेरे हैं ना। क्रिश्चन हो वा कोई भी हो। मैं आया हूं साथ में ले जाने लिए। फिर कोई प्रश्न ही नहीं उठता। सिर्फ यह निश्चय हो बाप आया हुआ है। सो जरूर नई दुनिया की स्थापना करेंगे। बाप है ही कल्याण कारी। बाप आया हुआ है फिर तो कोई प्रश्न ही नहीं उठ सके। यह है श्रीमत। मुझे याद करो तो सतोप्रधान बुधि बन जावेंगे। निश्चय बुधि विजयन्ती। संशय बुधि विनश्यन्ती। बाप सभी कुछ जानते हैं और समझाते हैं। हम कुछ भी नहीं जानते हैं। नेती2 तो करते रहते हैं। कुछ भी नहीं जानते हैं। भक्ति मार्ग में कुछ भी नहीं जानते। बाप से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। वह पतित-पावन है आपे ही सुनावेंगे। प्रश्न उठना न चाहिए। परन्तु माया है ना तो अपनी मत निकालते हैं। नहीं तो निकालनी न चाहिए। जो बाबा कहे वही सत्य। जो मनुष्य कहते हैं वह झूठ। प्रश्न न उठना चाहिए। बाप सत्य बोल कर सतयुग की स्थापना करते हैं। सभी का फायदा ही होता है। इसमें मुंझने की दरकार नहीं रहती। 84 जन्म भी भारतवासी के लिए है। और कोई को सुनाते नहीं। वह 84 जन्म थोड़े ही लेते हैं। जिसमें फर्क प्रयत्न करते हैं वही नम्बरवन। बाप बच्चों को ही सुनाते हैं। फिर बच्चों को औरों को सुनाना है। मैं तो बच्चों को ही सुनाता हूं। क्रिश्चन धर्मवाला होगा, मेरे से बादशाही ली न होंगी तो मैं उन से बात क्यों करूं। वह तुम बच्चों को मेहनत करनी है। तो जो भी आवे उनको बताओ बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। याद में ही सब कुछ भरा हुआ है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गायन है ना। 84 का चक्र भी तुम जानते हो। तुम जानते हो तो तुम ही जीवनमुक्ति पाते हो। बाप आया हुआ है तो समझना चाहिए ना। बाप आये ही हैं ले जाने लिए। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। चित्रों पर समझाना बहुत सहज है। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। कोई भी प्रश्न उठता ही नहीं। सभी हैं एडीटर। सुरत मनुष्य की सीरत बन्दर की है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। आज आया या कल आया जो भी आये सभी हैं पतित। पावन एक भी नहीं। पावन दुनिया में पतित एक भी नहीं। पतित दुनिया में पावन एक भी नहीं। यहां तो हर चीज़ है दुःख देने वाली है। इनको कहा जाता है आधा कल्प ज्ञान-मार्ग आधा कल्प भक्ति मार्ग। शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। जो भी शास्त्र पढ़ते हैं है सभी भक्ति। तुमको शास्त्र का नाम नहीं लेना है। जिससे हमारी दुर्गति हुई उनका नाम क्यों लेवें। बाप कहते हैं शास्त्र भक्ति मार्ग के हैं। उनकी बात न उठाओ। उन में सब हैं ईविल। पढ़ते2 हरेक नीचे ही उतरते हैं। बन्दर से भी बदतर इस समय के मनुष्यों को कहा जाता है। लड़ाई में देखो क्या करते हैं। बच्चों को श्रीमत पर ही चलना है। और कोई बात नहीं। स्वीट बाबा स्वीटेस्ट ही बनाते हैं। यह ज्ञान है ही खास भारतवासियों के लिए। यह है सहज ज्ञान। बाप जन्म लिया और हकदार बना। तुम विश्व के मालिक बनते हो। सिर्फ याद की यात्रा चाहिए। और कोई तकलीफ नहीं। बाप कहते हैं टाक नो ईविल। नानसेन्स पने की बात न करो। बाप के आगे यह किसने बताते हो। ईविल बातें छोड़ो। सभी का फायदा है ना। यह टेव पड़ जाती है बाप को याद करने की। बाप याद में शान्ति कर देनी है। उठते-बैठते बाप को याद करो। और कोई भी चीज़ को याद न करो। इन भक्ति-मार्ग शास्त्रों से ही तुम्हारी दुर्गति हुई है। अभी मैं जो सुनाता हूं वह सुनो। तो सद्गति को पावेंगे। अच्छा मीठे मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते